कहानी

चेतन का साहसिक सफर

एक हरे-भरे जंगल में चेतन नाम का एक छोटा हिरण रहता था. उसकी बड़ी-बड़ी आँखें और नन्हीं सी पूंछ उसे जंगल का प्यारा जानवर बनाती थी. उसके दोस्त थे–एक तोता रंगीला और एक खरगोश प्यारा. तीनों साथ में खेलते, हँसते, और जंगल की सैर करते थे. चेतन अक्सर कहता, दोस्तों, हमें हमेशा एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए, चाहे मुसीबत कितनी भी बड़ी हो! रंगीला हँसकर बोलता, हाँ, लेकिन तू तो डरपोक है, चेतन! प्यारा भी मज़ाक में जोड़ता, हाँ, बस भागने में माहिर है! चेतन मुस्कुराता, लेकिन मन में सोचता–एक दिन मैं साबित कर दूँगा.

एक दिन अचानक तेज बारिश शुरू हुई. नदियाँ उफान पर आ गईं, और जंगल में बाढ़ आ गई. पेड़ उखड़ गए, और जानवरों में अफरा-तफरी मच गई. चेतन, रंगीला और प्यारा एक ऊँचे टीले पर छिपे थे. रंगीला चीखा, चेतन, देखो, बाढ़ हमारे घर को बहा ले जा रही है! अब क्या होगा? प्यारा डरते हुए बोला, हम तो छोटे हैं, बच नहीं पाएँगे. चेतन ने गहरी साँस ली और कहा, डरो मत, दोस्तों. हमें हिम्मत से लड़ना होगा. मैं एक रास्ता ढूंढता हूँ.

चेतन ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई. बाढ़ के बीच एक टूटी पेड़ की शाखा नदी के उस पार तक पहुँच रही थी. उसने सोचा, अगर हम इस शाखा पर चलकर ऊँचे पहाड़ की ओर जाएँ, तो बच सकते हैं. उसने रंगीला से कहा, तू ऊपर से उड़कर रास्ता दिखा, और प्यारा, तू मेरे पीछे-पीछे आ. रंगीला ने हामी भरी, और प्यारा काँपते हुए बोला, लेकिन मैं डर रहा हूँ, चेतन! चेतन ने हौसला बढ़ाया, मैं तेरे साथ हूँ, चलो!

चेतन सबसे आगे बढ़ा. उसकी टाँगें काँप रही थीं, लेकिन वह शाखा पर धीरे-धीरे चला. रंगीला ऊपर से चिल्लाया, बाएँ जाओ, चेतन, वहाँ रास्ता साफ है! प्यारा चेतन के पीछे कूदता-फाँदता आ रहा था. अचानक शाखा हिलने लगी, और प्यारा फिसल गया. चेतन ने झट से अपनी सींगों से उसे पकड़ा और खींचकर शाखा पर लाया. प्यारा रोते हुए बोला, धन्यवाद, चेतन! तूने मेरी जान बचा ली. रंगीला ने नीचे उतरकर कहा, तू सच में साहसी है, दोस्त!

कुछ देर की मेहनत के बाद तीनों सुरक्षित पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए. वहाँ से उन्होंने देखा कि बाढ़ धीरे-धीरे कम हो रही थी. जंगल के बाकी जानवर भी उनकी हिम्मत देखकर चकित थे. एक बूढ़ा हाथी बोला, चेतन, तूने दिखा दिया कि छोटे से हिरण में भी बड़ी हिम्मत हो सकती है. चेतन ने मुस्कुराकर कहा, यह मेरी हिम्मत नहीं, दोस्तों के साथ मिलकर की गई कोशिश है.

उस दिन से जंगल में चेतन की तारीफ होने लगी, और हर जानवर ने सीखा कि मुसीबत में हिम्मत और एकता ही रास्ता दिखाती है.

सीख

बच्चों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हिम्मत और एक–दूसरे की मदद से कोई भी मुश्किल पार की जा सकती है. चेतन ने अपने डर को हराकर दोस्तों को बचाया. तो जब भी कोई चुनौती आए, डरने के बजाय हिम्मत से सामना करो और अपने दोस्तों का साथ दो!

बिंदु मिलाओ

रंग भरो

बंदरों में होती हैं कई अद्भुत प्रतिभाएं

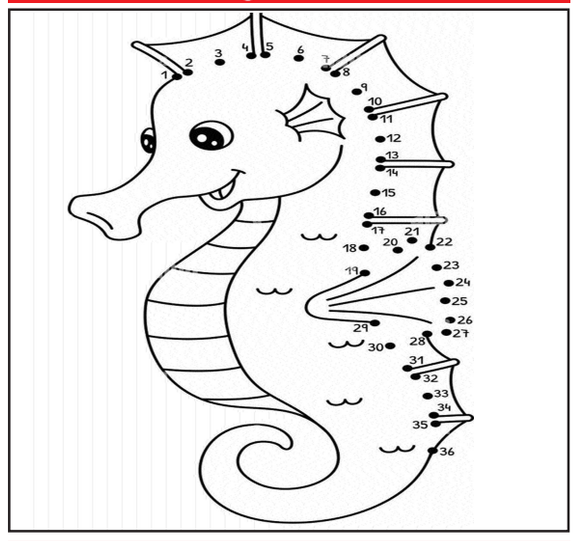

बंदर एक ऐसा जानवर है, जो दिखने में तो चूहे की तरह लगता है, लेकिन यह चूहे से बिल्कुल अलग होता है.

यह जानवर भारत में काफी प्रचलित है और इसका इस्तेमाल कई जगहों पर किया जाता है, खासकर मंदिरों में जहां यह प्रसाद चुरा लेता है. इसके अलावा भी बंदर से कई रोचक तथ्य जुड़े हुए हैं.

बंदर की किस्में– बंदर एक तरह का स्तनपायी जानवर है, जिसकी लगभग 260 किस्में पाई जाती हैं. ये किस्में दो मुख्य वर्गों (नई दुनिया के बंदर और पुरानी दुनिया के बंदर) में बंटी होती हैं. नई दुनिया के बंदर अमेरिका और दक्षिणी मेक्सिको में पाई जाती हैं, जबकि पुरानी दुनिया के बंदर अफ्रीका और एशिया में पाई जाती हैं.

भारत में पुरानी दुनिया के बंदर की 5 किस्में पाई जाती हैं, जिनमें रीसस मैकाक, लंगूर, नीलगिरी लंगूर, गोल्डन लंगूर और लंगूर शामिल हैं.

इंसानों से मिलते हैं बंदर के दांत– बंदर के दांत इंसानों के दांतों से काफी मिलते–जुलते होते हैं. खासकर उनके आगे वाले दांत बिल्कुल इंसानों जैसे दिखते हैं.

हालांकि, बंदर के दांत इंसानों के मुकाबले ज्यादा बड़े और तेज होते हैं.

इसके अलावा बंदर के दांतों की संख्या भी इंसानों से ज्यादा होती है, वहीं उनकी दांतों की बनावट भी इंसानों से अलग होती है. इसलिए बंदर के दांतों को इंसानों के दांतों की तरह न समझें.

बंदर का दिमाग होता है तेज– बंदर का दिमाग इंसानों के दिमाग से काफी मिलता–जुलता होता है. यही कारण है कि बंदर को देख कर कई लोगों को लगता है कि वह इंसान की तरह सोच सकता है. हालांकि, विज्ञान ने इस बात को गलत साबित कर दिया है कि बंदर इंसान की तरह सोच सकता है. दरअसल, बंदर का दिमाग इंसानों की तरह तो होता है, लेकिन वह सोच नहीं सकता है. इसके अलावा बंदर का दिमाग इंसानों की तरह नहीं होता है.

बंदर की आंखों में होती है अलग–सी चमक– बंदर की आंखें भी इंसानों से मिलती–जुलती होती हैं, लेकिन उनके अंदर एक अलग ही चमक होती है.इसके अलावा बंदर की आंखें इंसानों की तरह नहीं होती हैं, बल्कि उनके अंदर एक अजीब सी चमक होती है, जो उन्हें और भी ज्यादा आकर्षक बनाती है. इसके अलावा बंदर की आंखों में एक खास तरह का तेल होता है, जो उन्हें सूरज की रोशनी से बचाता है और उनकी आंखों को ठंडक पहुंचाता है.

बंदर की उम्र– बंदर की उम्र इंसानों से ज्यादा होती है, लेकिन उनकी उम्र इंसानों की तरह नहीं होती है. इसका मतलब यह नहीं कि बंदर इंसानों की तरह बूढ़े हो जाते हैं. दरअसल, बंदर की उम्र इंसानों से ज्यादा होती है, लेकिन उनकी उम्र इंसानों की तरह नहीं होती.

आर्ट एंड क्रॉफ्ट

जेब में रखने वाली छोटी किताब

जेब में रखने वाली छोटी किताब सामग्री:

कॉर्नफ्लेक्स का डब्बा, अंदर के कागजों के लिए एक कागज, एक रंगीन कागज, कैंची, फुट्टा, पेन, गोंद, सुई और धागा, बटन

छोटी किताब बनाने का तरीका

- कॉर्नफ्लेक्स के डिब्बे को अपनी किताब का कवर बनाने के लिए काटे.
- इसको आधे में मोड़े ताकि खाली जगह ऊपर आये.
- सुई धागे की मदद से किताब के आगे के हिस्से में बटन लगाए और करीब 50 सेंटीमीटर तक धागे को लटके रहने दे. यह किताब को बंद करने के काम आएगा.
- कॉर्नफ्लेक्स के डिब्बे पर बने चित्र को ढकने के लिए किताब के अंदर चारों कोनो पर गोंद लगाए और एक कागज चिपकाये और बचे हुए कागज को काट ले.
- अब किताब के अंदर लगाने वाले कागज ले और उन्हें किताब के आकार के हिसाब से काट ले.
- सुई और धागे की मदद से किताब के अन्दर कागज लगाए.
- अब रंगीन कागज के पीछे गोंद लगाए और इसे अपनी किताब के एक सिरे पर लगाए.
- किताब को और सुन्दर बनाने के लिए चारों ओर के कोनों को गोल आकार में काटे.

भूल भुलैया

प्रेरक प्रसंग

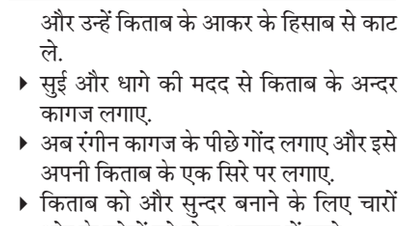

वेंकैया नायडू का शुरुआती जीवन

आज हम बात कर रहे हैं एक ऐसे भारतीय राजनेता की, जिनका जन्म आज ही के दिन 1949 में हुआ था. मुप्पावरापु वेंकैया नायडू का जन्म आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के छोटे से गाँव चवतापालेम में हुआ. उनके माता–पिता रंगैया नायडू और रामानम्मा थे. साधारण परिवार से आने वाले वेंकैया ने अपनी शिक्षा स्थानीय स्कूलों से शुरू की और बाद में आंध्र विश्वविद्यालय से विधि में डिग्री हासिल की.

एक छात्र नेता के रूप में, उन्होंने 1970 के दशक में जय आंध्र आंदोलन में हिस्सा लिया और आपातकाल के दौरान 17 महीने जेल में रहे. यह समय उनकी प्रेरक कहानी का पहला अध्याय था, जो दिखाता है कि मेहनत और हिम्मत से कुछ भी हासिल किया जा सकता है.

भारतीय राजनेता के रूप में योगदान– वेंकैया नायडू का राजनीतिक सफर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) से जुड़ने के साथ शुरू हुआ. 1978 और 1983 में वे आंध्र प्रदेश विधानसभा के लिए चुने गए. बाद में, वे 1998 में कर्नाटक से राज्यसभा के सदस्य बने और तीन बार फिर से चुने गए. उनकी वाक्पटुता और किसानों व पिछड़े क्षेत्रों के लिए काम करने की भावना ने उन्हें बीजेपी का लोकप्रिय चेहरा बनाया. 2002–2004 तक वे बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे. इसके बाद, 2014 में नरेंद्र मोदी सरकार में वे शहरी विकास, आवास और सूचना प्रसारण मंत्री बने. 11 अगस्त 2017 को वे भारत के 13वें उपराष्ट्रपति बने और 2022 तक इस पद पर रहे. इस दौरान उन्होंने राज्यसभा के सभापति के रूप में संसद की गरिमा बनाए रखी. उनकी प्रेरक कहानी बताती है कि एक छोटे गाँव से शुरूआत कर भी देश की सेवा कैसे की जा सकती है.

प्रमुख उपलब्धिया– वेंकैया नायडू की उपलब्धियाँ कई हैं. स्वच्छ भारत मिशन, स्मार्ट सिटी मिशन और अमृत योजना जैसी योजनाओं में उनके योगदान ने भारत के शहरी ढांचे को मजबूत किया. 2024 में उन्हें पद्म विभूषण, भारत का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान, दिया गया, जो उनके सार्वजनिक जीवन के लिए था.

कविता

चिड़िया का संसार

सबसे पहले मेरे घर का,
अंडे जैसा था आकार,
तब मैं यही समझती थी –
बस इतना सा ही है संसार.

फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनकों से तैयार,
तब मैं यही समझती थी –
बस इतना सा ही है संसार.

फिर मैं निकल गई
शाखों पर,
हरी-भरी थी जो सुकुमार,
तब मैं यही समझती थी –
बस इतना सा ही है संसार.

आख़िर जब मैं आसमान में,
उड़ी दूर तक पंख पसार,
तभी समझ में मेरी आया –
बहुत बड़ा यह संसार.

बूझो तो जानें

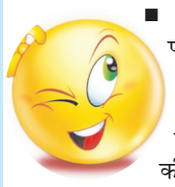

- वह क्या है जिसकी गर्दन है पर सिर नहीं?
  जवाब– बोतल
- काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी.
  जवाब– तवा और रोटी
- बूझो भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली.
  जवाब– पेंसिल
- एक लड़की 40 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गई, फिर भी उसे चोट नहीं लगी, कैसे?
  जवाब– क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से गिरी थी.
- वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं?
  जवाब– तुम्हारा नाम
- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?
  जवाब– उम्र

हंसी–ठिठोली

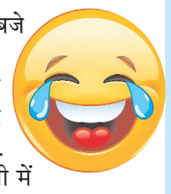

- चीकू- तुम रात में कितने बजे सोते हो?
  मीकु- अगर किताब उठा लूँ तो 9 बजे और अगर मोबाइल उठा लूं तो 2 बजे.
- टीचर– वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो, वसंत ने मुझे मुक्का मारा.
  चिंटू- वसन्तपंचमी
- सोनू– हम लद्दाख घूमने गए थे, वहाँ जून में भी लोग गर्म पानी से नहाते हैं.
  नटखट नीटू– इसमें कौन सी बड़ी बात है, हम दिल्ली में भी जून में गर्म पानी से नहाते हैं.
  सोनू- वो कैसे?
  नटखट नीट–दिल्ली में जून की गर्मी में टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि नल से सिर्फ गर्म पानी ही आता है.
- इलेक्ट्रिशियन- यह रेडियो ठीक है, बस मौसम खराब होने की वजह से काम नहीं कर पा रहा है.
  यामुंडा– लो 100 रुपये, और इसमें नया मौसम डाल दो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

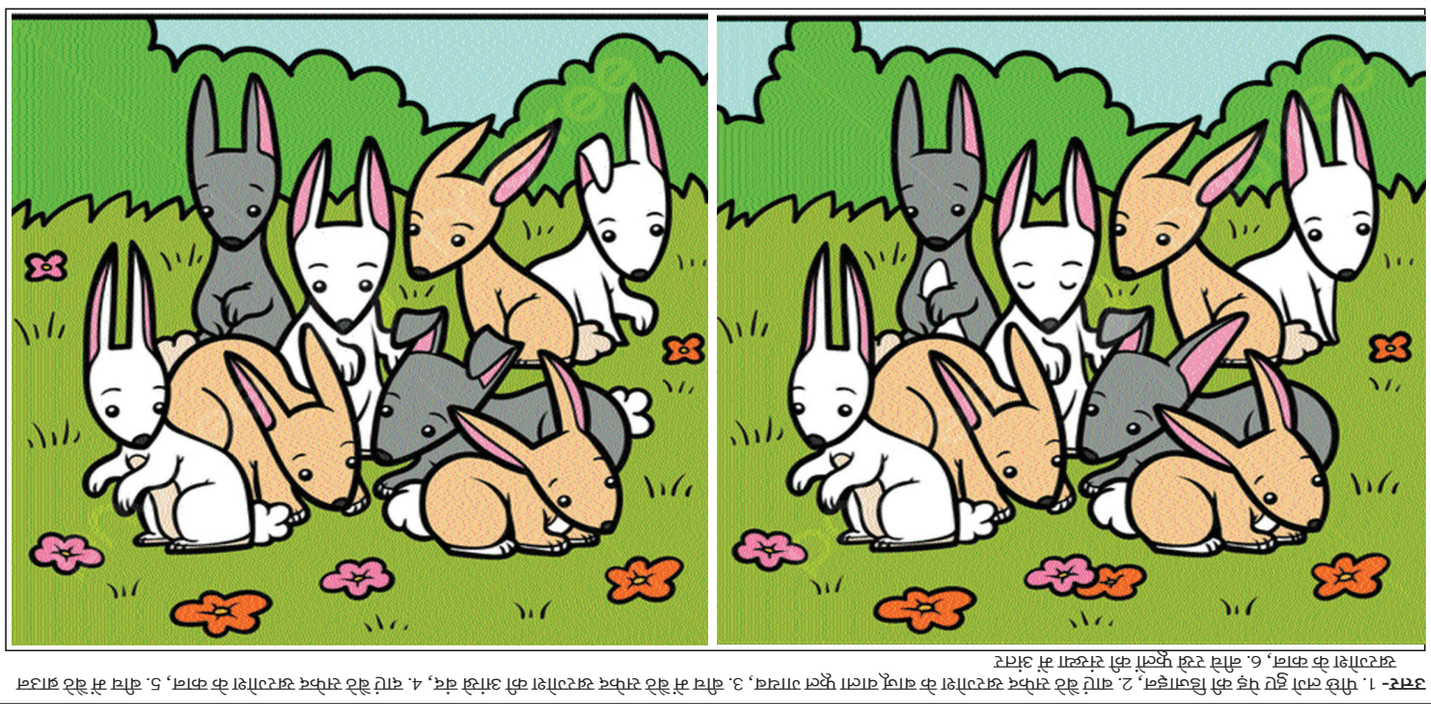

उत्तर- 1. पीछे लगे हुए पेड़ की डिजाइन, 2. बाएं बैठे सफेद खरगोश के बाजू वाला फूल गायब, 3. बीच में बैठे सफेद खरगोश की आंखे बंद, 4. दाएं बैठे सफेद खरगोश के कान, 5. बीच में बैठे ब्राउन खरगोश के कान, 6. नीचे रखे फूलों की संख्या में अंतर